Indu Kumari.
Assistant. Professor,
Dept. of Economics, B. N. College, Bhagalpur,
T. M. Bhagalpur University, Bhagalpur

द्वितीयक समंक

द्वितीयक समकं वे हैं जो पहले ही अन्य व्यक्तियों या संस्थाओं द्वारा एकत्रित व प्रकाशित किए जाते हैं और अनुसंधानकर्ता केवल उनका प्रयोग करता है उदाहरणार्थ यदि अनुसंधानकर्ता सरकार द्वारा रोजगार तथा गरीबी से संबंधित आर्थिक सर्वेक्षण में प्रकाशित आंकड़े का प्रयोग अनुसंधानकर्ता अपनी सुविधा अनुकूल करते हैं तो यह अनुसंधानकर्ता के लिए द्वितीय समंक होंगे।

अन्य शब्दों में किसी अन्य अनुसंधानकर्ता द्वारा संकलित विश्लेषक तथा प्रकाशित सांख्यिकी सामग्री द्वितीय समन कहलाती हैं और सांख्यिकी सामग्री में से संबंधित समंक का प्रयोग अन्य अनुसंधानकर्ताओं द्वारा भी किया जा सकता है। द्वितीय समको के प्रयोग में समको के मौलिक संकलन की समस्या उपस्थित नहीं होती द्वितीय समको को प्रकाशित अथवा अप्रकाशित स्रोतों से उपलब्ध किया जा सकता है।

प्रकाशित स्रोत

द्वितीय आंकड़े के मुख्य प्रकाशित स्रोत निम्नलिखित हैंः

I. **सरकारी प्रकाशन**
   भारत की केंद्रीय तथा राज्य सरकारों के मंत्रालय तथा विभाग विभिन्न विषयों से संबंधित आंकड़े प्रकाशित करते रहते हैं यह आंकड़े काफी उपयोगी तथा विश्वसनीय होते हैं कुछ प्रमुख सरकारी प्रकाशन निम्नलिखित हैं जैसे स्टैटिसटिकल एब्स्ट्रेक्ट ऑफ इंडिया , एनुअल सर्वे ऑफ इंडस्ट्रीज, एग्रीकल्चरल स्टैटिसटिक्स ऑफ़ इंडिया, रिपोर्ट ऑन करेंसी एंड बैंकिंग, लेबर गजट, बैंक ऑफ इंडिया बुलेटिन.
II. **अर्ध सरकारी प्रकाशन**- अर्ध सरकारी संस्थाएं जैसे नगर पालिका, नगर निगम जिला परिषद, आदि भी कई मदों जैसे जन्म मरण, शिक्षा स्वास्थ्य आदि से संबंधित आंकड़े

प्रकाशित करती रहती हैं यह आंकड़े भी विश्वसनीय तथा अनुसंधान के लिए उपयोगी होते हैं।

III. **समितियों व आयोगों की रिपोर्ट-** सरकार द्वारा नियुक्त विभिन्न समितियों तथा आयोगों की रिपोर्टों में महत्वपूर्ण आंकड़े संकलित होते हैं उदाहरण के लिए वित्तीय आयोग, एकाधिकार आयोग, योजना आयोग/ नीति आयोग आदि द्वारा प्रकाशित रिपोर्ट से उपयोगी आंकड़े प्राप्त होते हैं।

IV. **व्यापारिक संघों के प्रकाशन**- बड़े बड़े व्यापारिक संघ भी अपने अनुसंधान तथा सरकारी विभागों द्वारा एकत्रित आंकड़े प्रकाशित करते रहते हैं उदाहरण के लिए चीनी मिल संघ चीनी कारखानों से संबंधित आंकड़े प्रकाशित करते रहते हैं, टाटा संस लिमिटेड, हिंदुस्तान लीवर लिमिटेड, भारतीय वाणिज्य व उद्योग संघ, भारतीय सूती वस्त्र मिल फेडरेशन, जूट मिल्स एसोसिएशन, ट्रेड यूनियन, आदि।

V. **अनुसंधान संस्थाओं के प्रकाशन**- विभिन्न विश्वविद्यालय तथा अनुसंधान संस्थान अपने शोध कार्य के परिणाम प्रकाशित करते रहते हैं उदाहरण के लिए भारतीय सांख्यिकी संस्थान, व्यवहारिक आर्थिक शोध की राष्ट्रीय परिषद, आदि संस्थाएं कई प्रकार के उपयोगी आंकड़े प्रकाशित करती हैं।

VI. **पत्र पत्रिकाएं** कई समाचार पत्र जैसे इकनॉमिक टाइम्स पत्रिकाएं जैसे योजना फैक्ट फॉर यू कॉमर्स आदि भी उपयोगी आंकड़े प्रकाशित करती हैं।

VII. **व्यक्तिगत अनुसंधानकर्ताओं के प्रकाशन**- व्यक्तिगत अनुसंधानकर्ता भी अपने अनुसंधान संबंधी आंकड़े को एकत्रित करके उनका प्रकाशन करवाते रहते हैं।

VIII. **अंतरराष्ट्रीय प्रकाशन**- अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं जैसे संयुक्त राष्ट्र संघ, अंतर्राष्ट्रीय श्रम संघ, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक आदि तथा विदेशी सरकारें भी महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय आंकड़े प्रकाशित करते हैं इनका द्वितीय आंकड़ों के रूप में प्रयोग किया जाता है।

अप्रकाशित स्रोत- द्वितीय आंकड़ों का अप्रकाशित स्रोत भी होते हैं। अनेक अनुसंधानकर्ता विभिन्न उद्देश्यों से सांख्यिकी सामग्री संकलित करते हैं जो किन्ही कारणों से प्रकाशित नहीं हो पाती प्रकाशित सामग्री का भी अनुसंधानकर्ता प्रयोग कर सकता है।

द्वितीय आंकड़ों का प्रयोग करते समय सावधानियां

आंकड़ों का बहुत अधिक प्रयोग किया जाता है अतः इसका प्रयोग करते समय अतिरिक्त सावधानी तथा देखभाल रखी जानी चाहिए। द्वितीयक आंकड़ों का प्रयोग करते समय निम्नलिखित सावधानियां रखनी आवश्यक हैः

1) **अनुसंधान का उद्देश्य**- उपलब्ध द्वितीय आंकड़ों का प्रयोग करने से पूर्व अनुसंधानकर्ता को अनुसंधान के उद्देश्य की पूरी जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए जिसके लिए द्वितीय आंकड़े प्रयोग में लाए जाते हैं।
2) **अनुसंधानकर्ता**- सर्वप्रथम आंकड़े संकलन करने वाले अनुसंधानकर्ता की लगन के बारे में ज्ञात करना चाहिए अन्यथा यह संभव है कि प्रयोग में लाए जाने वाले आंकड़े अनुसंधान के उद्देश्य को पूरा ना कर सके या वह निर्णय ना दे सके जिनके लिए अनुसंधान किया जा रहा है।
3) **आंकड़े संकलन की विधि**- प्राथमिक आंकड़ों के संकलन में कौन सी विधि का प्रयोग किया जाता गया है इसकी भी जांच की जानी चाहिए।
4) **अनुसंधान का समय**- उपलब्ध सांख्यिकी की सामग्री का उपयोग करने से पूर्व यह ज्ञात करना चाहिए कि वह किस समय से संबंधित है तथा किन परिस्थितियों में उनका संकलन किया गया है। युद्ध में किए गए अनुसंधान से प्राप्त अंकों का उपयोग शांति काल में नहीं करना चाहिए, इसी प्रकार अभिवृद्ध काल (बूम पीरियड) मे संकलित आंकड़ों का उपयोग अवसाद काल (रिसेशन पीरियड) में नहीं करना चाहिए यदि समंक थोड़े समय के हैं, तो वह अल्पकालीन परिवर्तन से प्रभावित हो सकते हैं। समकों के प्रारंभिक संकलन और उनके उपयोग के समय की परिस्थिति में अंतर होने कारण उनकी उपयोगिता कम हो जाती है।
5) **संगणना और निदर्शन विधियां**- संगणना विधि या निदर्शन विधि वास्तव में परिशुद्धता तथा विश्वसनीयता के निकट है। निदर्शन विधि प्रतिदर्श का चुनाव करते कसमय पक्षपात पूर्ण हो सकते हैं, इन सब बाते द्वितीय सम अंको का प्रयोग करने से पूर्व निश्चित कर लेनी चाहिए।
6) **इकाई की परिभाषा**- संकलित आंकड़े के प्रयोग करने से पहले यह देख लेना चाहिए कि पूर्व अनुसंधान में आंकड़ों की इकाइयों का जिन अर्थों में प्रयोग किया गया है वह वर्तमान अनुसंधान में प्रयोग की जाने वाली इकाइयों के अर्थ के समान है अथवा नहीं। यदि उनमें समानता नहीं पाई जाती तो उनका प्रयोग उपयुक्त नहीं होगा।
7) **शुद्धता**- उपलब्ध आंकड़ों का द्वितीय आंकड़ों के रूप में प्रयोग करने से पहले उनकी शुद्धता के स्तर की भी जांच कर ली जानी चाहिए। यदि वर्तमान अनुसंधान के लिए शुद्धता का उच्च स्तर आवश्यक हो जबकि उपलब्ध आंकड़ों के संकलन में केवल सामान्य शुद्धता के ध्यान में रखा गया हो तो ऐसे आंकड़े उपयुक्त नहीं होंगे।